जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

(पांडुशिला, सिंघासन ,छत्र ,चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश,पूजा बर्तन चंदोवा,तोरण,झारी)

नोट :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

Contact:-
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जैन

जय जिनेन्द्र

गाय का शुद्ध देशी घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में
रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

घी ऐसा के दिल जीत जाये !

अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध

संपर्क सूत्र

Contact For Order

Sourabh Sagar Indore

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

All India Home Delivery

10.

ॐ

रत्नत्रय विधान

(कविवर पण्डित टेकचन्द जी विरचित)

प्रस्तावना बेसरी छन्द

सरधो जानो पालो भाई, तीनों में कर राग जुदाई।
लै लै नीका द्रव्य सुसारा, पूजे पाओ मोक्षगारा।।

नाराच छन्द

भला सुज्ञान दर्शना-चरित्तरा सुसार है। भवसमुद्रनाव मोक्ष-पन्थ का अधार है।।
यही जु पन्थ सिद्धि का, नहीं जु और जानिये। जजों सुदर्श ज्ञान वा चरित्र भक्ति आनिये।।
सार येहि तीन रत्न, पारखी मुनीन्द्र हैं। लहें जु राज छांडि या, बिना गुणी न सोह हैं।।
नहीं जु राग द्वेष ताहि, पाइये कदा सही। तीन रत्नरूप वस्तु, चित्त में जिन्हों लही।।
मुनीन्द्र याहि पायके, न पांय फिर भवा सही। जिनेन्द्र याहि पायके, प्रिया शिवा तिया गही।
यही जु तीन मानका, जु मोक्षपन्थ जानका। यही जु ज्ञान केवला, निकट्ट वेग आनका।।
यही जु तीन रत्न इन्द्र, चन्द्र को नहीं मिलें। खगा फणीन्द्र चक्रि को, न भूप को धरा तलें।।
मुनी बिना सराग के, न पाइये कभी सही। जु तीन होय एकठे, जिनेन्द्र के गुणा यही।।
नमों जु ज्ञान दर्शना, चरित्र जो शिवा पथा। रहे सदा हिये सुभक्ति, मो तने इन्हीं कथा।।
भवान्तरे मिलें सु मोहि, तीन रत्न आयके। चाह और मोय ना, सुनो जु अर्ज ध्यायकें।।

गीतिका दन्द

ये तीन रत्न अपार मौलिक, पारखी विरलो सही।
जिये मोह अन्ध न भेद पावे, खेद जो बहुतो लही।।
होवे निकट भव अब्धि जाके, सो लहे सहजहिं भया।
मुनि होय राज्य विहाय पावे, शाश्वती पद इन दया।।
इनहीं प्रभावै मोक्ष पावे, कर्म नाशे भवकरा।
सुख होय सब दुख खोय, सहजहिं स्वर्ग पावे मनहरा।।
ये ज्ञान सम्यक दर्श चारित, तीन ही सुखदाय हैं।
इन धार जग में पूज्य पदवी, लहे जिनधुनि गाय है।।

अडिल्ल छन्द

रत्नत्रय भव हरे, स्वर्ग शिवदाय जी। रत्नत्रयसम आभूषण, ना दिखलाय जी।।
याकी महिमा देख, इन्द्र से पग परे। ये त्रय ज्ञान बढाय, सिद्धथल ले धरें।।

चौपाई छन्द

रत्नत्रय जिन भव भरमाय, रत्नत्रय तजि पाप कमाय।
अब हम उर वाञ्छा यों थही, मिले हितू रत्नत्रय सही।।

सोरठा

यह रत्नत्रय सार, शरण मिल्यो हमको सही। भवधि तारनहार, तातें मैं पल पल नमों।।

दोहा

रत्नत्रय जग में कहा, मुक्ति महा फलदाय। योग शुद्ध करके नमों, भवतति लेहुँ नसाय।।

अथ समुच्चय पूजा

स्थापना: गीतिका छन्द

सत्य दर्शन ज्ञान चारित, मोक्ष मारग जिन कहे।
मोक्षाभिलाषी धरें इनको, इन बिना शिव ना लहे।।
यों जानि तीनों रत्न पूजों, ध्याय के इसही धरा।
उर भक्ति धर मन वच काया, ता फलें सब अघ हरा।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्ररूपरत्नत्रयधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। पुष्पांजलि क्षिपामः।

अष्टकम् (चाल मुनियानन्दी)

नीर निरमल पदम, कुण्ड को सार जी। उज्ज्वलो क्षीरसम, सरस या धार जी।।
रत्नझारी विषें, लेय गुण गाय के। जजों दरशन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: जलम् निर्वपामीति स्वाहा।
बावनों चन्दना, अगर शुभ लाइये। नीर निरमल थकी, घसि सुरभि लाइये।।
कनक पियाले विषें, धरि सुगुन गाय के। जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: सुगन्धम् निर्वपामीति स्वाहा।
श्वेत अक्षत सुभग, शुद्ध नख सिख सही। गन्धधर यों यथा, फूल कुन्दा कही।।
धार पातर विषें, आप कर लायके। जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
फूल कल्पवृक्ष के, रंग नाना धरें। गन्ध आपनो थकी, भ्रमर मन वश करें।।
पुष्प ऐसे तनी, माल कर लाय के। जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।
सुभग नैवेद्य जो, भले रस धार जी। सद्य मोदक घने, स्वाद करतार जी।।
यों चरू कंचन के, पात्र धर लाय के। जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
दीप मणिमय महा, ज्योतिकर्त्ता सही। तेज ताके कने, ध्वान्त भागे सही।।
धार शुभपात्र में, दीप कर लाय के। जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।
धूप दशधा महा, गन्ध पूरित कही। बहु चन्दनादि शुभ, द्रव्य संयुत सही।।

लेय कर धूप यों, अगनि में लाय के। जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।
लोग खारक भले, श्रीफला सार जी। सुभग बादाम पुँगी, फलाधार जी।।
इन आदि लेय फल, आप कर लायके। जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: फलम् निर्वपामीति स्वाहा।
नीर चन्दन अक्षत, फूल चरु जानिये। दीप अरु धूप फल, अर्घ्य कर आनिये।।
धारि उर भक्ति गुन, गाय सुख पाय के। जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: अर्ध्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
दरश ज्ञान वृत्त ये, रत्न शुभ हैं सही। यही तीन रत्न शिव, लोक को दें मही।।
जान यों अर्घ्य, ले, आय उमगाय के। जजों दर्शन सुज्ञान, वृत्त हरषाय के।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्य: महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाल

तीन रत्न मुनिराज धन, अविनाशी विन छेह। इन्द्र स्तुतिवाँछा करे, कवि मांगत है येह।।

त्रिभंगी छन्द

सम्यक दृक जाके, हो शिव ताके, दोष न बाके होय कदा।
सम्यक् शुध जानो, हो भ्रम हानो, तत्त्व पिछानो, मोक्ष पदा।।
चारित शुध धारें, सम्यक लारे, भवदधि तारे नाव जिसो।
यह तीनों रत्ना कर इन यत्ना, गुरुवच इतना पूज तिसो।।
यह सम्यक् धारा सबको प्यारा, अघ तैं न्यारा धर्म धरे।
शुभ ज्ञान उपावा सो शुध भावा, शिवमग धारा कर्म हरे।
शुध चारित नीका, सुखदा जियका, शिवतिय पियका मीत जिसो।
यह सम्यक् धारा सबको प्यारा, अघ तैं न्यारा धर्म धरे।
तिस सम्यक् पाया दोष उड़ाया, जिनगुण गाया, ज्ञान धरं।
ले सम्यक् ज्ञानी, अम्मृत पानी, भवतप हानी, पुष्ट करं।।
चारित भवसागर, नाव उजागर, पार उतारन, जान तिसो।
यह सम्यक् धारा सबको प्यारा, अघ तैं न्यारा धर्म धरे।
सुध सम्यक् सारं, भविजिय धारं, है भव तार, सिद्ध थलं।
यह सम्यक् ज्ञानं, भ्रमतम हानं, यह विध जानो, युक्तकल।।
चारित शुध सोई, शिवमग जोई, तारक जो हो, नाव जिसो।
यह सम्यक् धारा सबको प्यारा, अघ तैं न्यारा धर्म धरे।
सम्यक् परभावा, नहिं भवदावा, मरण मिटावा, सुखकारी।
जो सम्यग्ज्ञानी, दया-निधानी, सब विधिजानी, गुणधारी।।
सम्यक् चारित्ता, जग जिय मित्ता, सज्जन चित्ता, मित्र जिसो।

यह सम्यक् धारा सबको प्यारा, अघ तैं न्यारा धर्म धरे।
सम्यक् धन जाके, सुर नत बाके, कभी न वाके धन-धारी।
जे सम्यग्ज्ञानी, मिथ्याभानी, ज्ञान पिछानी, सुखकारी।।
चारितधर जोगी, शिवतिय भोगा, मोक्षनियोगी, जीव जिसो।
यह तीनों रत्ना कर इन यत्ना, गुरु वच इतना पूज इसो।।
सम्यक् सुध सो ही, लखे न मोही, सत्य जु सो ही, कर्म टरे।
जिन भाषित ठाने, निज पर जाने, सम्यग्ज्ञान सोहि धरे।।
जो चारित धारें, कर्म निवारे, आत्म सुधारें, ध्यान जिसो।
यह सम्यक् धारा सबको प्यारा, अघ तैं न्यारा धर्म धरे।।
सम्यक् सरधाना, कुगुरु छुड़ाना, बुध परधाना, मोक्ष चहा।
सो सम्यज्ञानी, जिनध्वनि जानी, सब विध मानी, और कहा।।
जे चरित धारी, निज अघहारी, पुण्य भंडारी, जान जिसो।
यह सम्यक् धारा सबको प्यारा, अघ तैं न्यारा धर्म धरे।।

दोहा

सम्यग्दर्शन ज्ञान सह, चारित देहु मिलाय। तीनों शिवमग जिन कहे, जो होते शिवदाय।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्यग्दर्शन पूजा

अडिल्ल छन्द

सम्यग्दर्शन सोय, जहाँ वसुमद नहीं, शङ्कादिक वसु दोष, रहें जामें नहीं।
नहीं मूढता तीन, अनायतन षट नहीं, या विध समकित थाप, जजों शुभथल मही।

ओं ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। परिपुष्पांजलि क्षिपामः।

अथ अष्टकम् - गीता छन्द

वर नीर सागर क्षीर जैसो, उज्जवलो सुखदाय जी।
शुभगन्ध निर्मल स्वाद याको, सद्य शुद्ध सुल्याय जी।।
धरि रतनझारी हाथ ले निज, भक्ति उर में बहु धरी।
मैं जजों सम्यक् दरस मल बिन, भाव सों थुति उच्चरी।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

बाबनो चन्दन सुगन्ध सु, नीर संग घसि लाय हो।
शुभ अगर आदि मनोज्ञ गन्ध, सु तास में मिलवाय हों।।
ले कनक पातर भावशुभ तैं, भक्ति धन-लक्षहिं धरी।
मैं जजों सम्यकदरशमल बिन, भाव सों थुति उच्चरो।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखण्डित बीन नख शिख, शुद्ध उज्जवल लाय जी।
शुभ गन्धमय अति धोय नीके, आप कर सुखदाय जी।।
कर भले पातर मांहि तिनको, भक्ति शुभ फलदा करी।
मैं जजों सम्यकदरशमल बिन, भाव सों थुति उच्चरी।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल शुभतर वरन नाना, जाति हू बहुविध सही।
अतिगन्ध युत सुरवृक्ष के शुभ, जाय उपमा ना कही।।
कर माल तिनकी हाथ ले निज, भावना सुध उर धरी।
मैं जजों सम्यकदरशमल बिन, भाव सों थुति उच्चरी।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य मोदक आदि नीके, और भी बहुविध कही।
तिन मांहि नाना मेल रसको, स्वाद की मानों मही।।
चरु करी या विध धारि पातर, भक्ति मन वच तन धरी।
मैं जजों सम्यकदरश मल बिन, भाव सों थुति उच्चरी।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर दीप मणिमय ज्योति धारो, नाश-कर तम को सही।
धर मध्य पातर हेम के शुभ, आरती करनी चही।।
उर भक्ति मनवचकाय धरि करि, विनय तें मुख थुति करी।
मैं जजों सम्यकदरश मल बिन, भाव सों थुति उच्चरी।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशधा द्रव्य ले के, करी है सुखकार जी।
तिस मांहि गन्ध अपार प्रसरत, भ्रमर शब्द उचार जी।।
इस जाति की शुभ धूप लेकर, अग्नि में थुति कर धरी।
मैं जजों सम्यकदरश मल बिन, भाव सों थुति उच्चरी।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सुपारी लोंग खारक, चोच मोच बदाम जी।
इन आदि और अनेक फल ले, महाशुभ के धाम जी।
ले भक्ति कर धर सुभग बासन, आपने कर ले धरी।
मैं जजों सम्यकदरश मल बिन, भाव सों थुति उच्चरी।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप सु फल सही।
सब मेल अर्घ्य बनाय नीको, भले पातर मैं लही।।
उर भक्ति मन वच काय करके, एक ध्यान सु तैं करी।

मैं जजों सम्यकदरश मल बिन, भाव सों थुति उच्चरी।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्दर्शनाय अर्ध्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य - त्रिभंगी छन्द

मम नाना मामा, अतिबल ठामा, धन के धामा सुखदाई।
तिन राज सुमानें, सब जग मानें, वचन प्रमानें सब भाई।।
यह 'जाति' सुमद्दा, जानि निषिद्दा, अघ की हद्दा, जान हिये।
याको जु निवारे, सम्यक् सारे, शिवपद धारें, जजि थुति ये।।

ओं ह्रीं जातिमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

है बाप हमारा, सुत धन वारा, सब को प्यारा ज्ञानमई।
सुत दारा मेरा, नृप ढिग केरा, काम करेरा, जान सई।।
यह 'कुलमद' जानो अघ को थानो, तज वच मानो, बात हिये।
सम्यक् या बिन सो, मोक्ष करन सो, जजि भाव मन सों, भक्ति दिये।।

ओं ह्रीं कुलमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मैं बहुत कमाऊँ, द्रव्य उपाऊँ, सब दिश जाऊँ खेप लई।
मो में बुध नीकी, बनज करे की, युक्ति धरे को बात सई।।
जँह ही मैं जाऊँ, आदर पाऊँ, नव-निधि लाऊँ, जान हिये।
यह 'धन' का मद्दा, जान निषिद्दा, सम्यक् शुद्धा, जजि थुति ये।।

ओं ह्रीं धनमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो रूप हमारो, और न धारो, मोसें हारो, मद जिसो।
सुर हू लखि लज्जे, यों छवि छज्जे, बहु कहा कहिज्जे, जान इसो।।
यह 'रूप' मदा है' ज्ञान जुदा है, सम्यक् दाहै आप मई।
तज याको भाई, जजि थुति लाई, सम्यक् पाई मोक्ष सई।।

ओं ह्रीं रूपमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मैं तपसी भारी, शक्ति अपारी, वास धरारी वरष मई।
चंचल मन जीत्या, भवभय भीत्या, नहिं तन मीत्या जान भई।।
यह 'तपमद' जानो, अघ को थानो, दोष बड़ानो, कर हानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी।।

ओं ह्रीं तपोमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हम बहु बनवाना, मल्ल समाना, गजमद हाना, जोध सही।
मेरे बल आगे, अरिभय लागे, को मो आगे, धीर कही।।
यह 'बल' को मद है, अघ को हद है, सब हित रद है करि हानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई मुनि मानी।।

ओं ह्रीं बलमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मैं बहुश्रुत जोई, भरम न कोई, चर्चा जोई, बात करो।
मैं षट् मत जोये, पंडित टोये, सब मत जोये, ज्ञान धरो।।
'विद्यामद' ये ही, तजि भवि जेही, सरधा ये ही जिनवानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई, मुनि मानो।।

ओं ह्रीं विद्यामदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मोकों नृप जाने, मुखिया माने, जग सन्माने, हुकुम घनों।
चाहों मैं मारों, तथा उघारों, वचन उचारों सोइ ठनों।।
यह मद 'अधिकारी' तज भवधारी, भाव सम्हारी धुनि ठानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओं ह्रीं अधिकारमदरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जँह शंका आवे, धरम नशाये, पाप बढ़ावे, दुखदाई।
शंका जब होई, सम्यक् खोई, सरधा वोई मन लाई।।
यह 'शंका' मद है, फल अति खल है, त्याग सु-कल है, मन आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओं ह्रीं शंकामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो वृष-रस चाखे, फल अभिलाखे, जगसुख भाखे, मोहि मिले।
मैं जिनवृष सेऊँ, खगथल लेऊँ, सुरसुख वेऊँ, चाह फले।।
यह वाञ्छा जानो, काँक्षा मानो, तज वच आनो, जिनवानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओं ह्रीं काँक्षामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पर वस्तु सु जोवे, घिन चित बोवे, अरति बढ़ोवे, मन माँहीं।
यह वस्तु बुरी है, क्यों जु धरी है, कौन करी है, दुखदाई।।
यह दोष विचिकित्सा, अघ को अंशा,त्यागो मनसा, श्रुतज्ञानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओं ह्रीं विचिकित्सामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो भेद न पावे, शीश नवावे, भक्ति बढ़ावे, वेद कही।
सब को गुरु माने, ज्ञान न आने, धर्म न जाने, शुद्ध सही।।
यह मूढ स्वभावा, पाप बढ़ावा, तज सुख दावा, मन आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओं ह्रीं मूढतामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पर अवगुण जोई, ढके न सोई, मुख कह कोई, पाप धरा।
पर के छल देखे, कहत विशेखे, सो अघ भेखे जान खरा।।
कह दोष पराया, यह अघ भाया, त्याग सुभाया, बुध आनी।

सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओं ह्रीं अनुपगूहनमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लख धर्म पराया, दोष बढ़ाया, पाप उपाया, मन ल्याई।
या धर्म बढ़ाऊँ, सो विधि लाऊँ, ज्ञान बढ़ाऊँ, चित ल्याई।।
यह अवगुण जानो, अतिथि सुमानो, तजि हित आनो शुभ जानी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओं ह्रीं अस्थितिकरणमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मी जन जोवे, हरष न होवे, समचित सोवे अघ-हारी।
वृषथान निहारे, नेह न धारें, सकति सम्हारे, अधिकारी।।
यह बत्सल नाहीं, पाप बढ़ाई, तज मन लाई, बुध आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई,जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओं ह्रीं अवात्सल्यमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उत्सव नहिं जाने, हरष न आने, नाहिं सुहाने, मन मांहि।
नहिं ताहि सरावे, जस नहिं गावे, पाप कमावे, चित ठांही।।
यह दोष बड़ा है, त्याग जुड़ा है, धर्म बड़ा है, मन आनी।
सम्यक् सुध सोई, जजि अघ खोई, जिनध्वनि जोई, मुनि मानी।।

ओं ह्रीं अप्रभावनामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छन्द

ना सर्वज्ञ, न तारन हार, ताको पूजत देव निहार।
सो यह देवमूढता जोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं देवमूढतारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म दया बिन सो है सही, धारण करे प्रतीक्षा नहीं।
सो यह धर्ममूढता सोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं धर्ममूढतारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग नहिं नगन शरीर, सेवे कुगुरु राग धर धीर।
सो यह गुरूमूढता जोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं गुरुमूढतारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मनाश बिन देव कहाय, तिनको परशंसै थुति गाय।
यह अनायतन दोष सुजोय, इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं कुदेवप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ताहि कुदेव सेवक हूं जान, परशंसै मन में हित आन।
यह अनायतन दोष जु होय, इस बिन जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं कुदेवसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दयारहित ही धर्म सु मान, फिर ताकी परशंसा ठान।
यह अनायतन दोष जु होय, इस बिन जजि सुध समकित सोय।।
ओं ह्रीं कुधर्मसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
हिंसा धर्म सेवकी जान, ताको परशंसै शुभ मान।
यह अनायतन दोष जु होय, इस बिन जजि सुध समकित सोय।।
ओं ह्रीं कुधर्मसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
राग द्वेष धर प्रज्ञावान, ये गुरु परशंसै बिन ज्ञान।
यह अनायतन दोष जु होय, इस बिन जजि सुध समकित सोय।।
ओं ह्रीं कुगुरुप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
कुगुरुन की सेवा जो करे, ताकी परशंसा चित धरे।
यह अनायतन दोष जु होय, इस बिन जजि सुध समकित सोय।।
ओं ह्रीं कुगुरुसेवकप्रशंसानायतनदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
यह द्यूत व्यसन है पाप-मूल, यह खेल लहे जिय दुःखशूल।
दे अपयश वध बन्धन सु जोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।
ओं ह्रीं द्युतव्यसनरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
आमिष-खाये मन अशुचिवान, हिंसा या सम होवे न आन।
तिस देखत ही मन मलिन होय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।
ओं ह्रीं आमिषव्यसनरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
पीके मदिरा मूर्छा लहाय, सब सुध बुध अपनी दे गमाय।
यह मदिराव्यसन सुधर्म खोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।
ओं ह्रीं मदिराव्यसनरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गणिका गिन पातल जूठ जेम, अति लोकनिन्ध परसिद्ध येम।
यह व्यसन नरकपद-दाय जोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।
ओं ह्रीं गणिकाव्यसनरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जे जीव घास खा वन वसाय, तिन को मारे पारधि कुभाय।
यह व्यसन नरक मारग सुजोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।
ओं ह्रीं आखेटव्यसनरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
परद्रव्य हरें दुठ चोर जान, लहि वध बन्धन जगनिन्ध थान।
यह चौर्यव्यसन दुखदाय जोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।
ओं ह्रीं चौर्यव्यसनरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
परनारि व्यसन दुठ जीव धार, सो लहें नरक दुख पापभार।
यह व्यसन महादुखदाय जोय, इस बिन जजि सुध सम्यक्त्व सोय।।
ओं ह्रीं परनारिव्यसनरहिताय श्रीसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छन्द

किये दान संक्राती सुजान, होय सुखी जीव नहिं दुःख मान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं कुपर्वदानदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रह पूजें सुख साता मान, नहिं पूजें दुख-कूप बखान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं चन्द्रसूर्यादिग्रहपूजारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूजें भूमी भूपति थाय, इस विधि मिथ्याभाव उपाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं भूमिपूजारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसामग जो सेव कराय, मिथ्या मन्त्र जन्त्र पुजवाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं कुधर्मसेवारहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत पूजें दीरघ जान, जाके जजे होय हित मान।।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं पर्वतादिपूजामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उदधि नदी सपरें अघ जाय, होय पुण्य जिय को सुखदाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं उदधिस्नानमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि मांहि जीवित जर जांय, देवपना वे जीव लहाँय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं अग्निपातमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कुगुरु सेवतें साता पाय, यह दे ऋद्धि परम सुखदाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं कुगुरुसेवामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि देव कर मानें सही, पूजे दीपक हो शुभ कही।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं अग्निसेवामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गाय मूत्र अति पूत बताय, या लागे तन निर्मल थाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं गोमूत्रसेवामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गज घोटक वृष सेव कराय, इन सेये इन लाभ लहाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं वाहनसेवामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अति बरछी भाला बन्दूक, पूजें शक्ति लहें ना चूक।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं शस्त्रपूजामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बालक पूजें देव सु मान, सो सब मिथ्यातम मतिमान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं बालकपूजामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गिरितें पड़तो काम छुड़ाय, तो वांछित सुख को जन पाय।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं गिरिपतनमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसक देव दया बिन जान, देखत क्रूर, जजें सुख मान।
ऐसो भरम जहां नहिं होय, इस विध जजि सुध समकित सोय।।

ओं ह्रीं हिंसकदेवसेवामलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निशा अहार करे नहिं जोय, जाके उर करुणा बहु होय।
मांसाहारी निश को खाय, या बिन जजि सुध समकित भाय।

ओं ह्रीं निशाहारमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अनगाल्यो जल पीवे नांहि, दयासहित उर धर्म सुभाय।
ऐसो गुण जाके बहु होय, सो समकित पूजें सुख होय।

ओं ह्रीं अगालितजलपानमलरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

इत्यादिक गुणजुत जो होय, कहे दोष ते एक न जोय।
निश्चय अरु व्यवहार सुधाय, सो समकित पूजों थुति लाय।।

ओं ह्रीं सर्वदोषरहिताय श्री सम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाल

समकित सांचा धर्म है, मोक्षवृक्ष को मूल। श्रद्धा करना गाढ-उर, हरे विषय अधशूल।।

बेसरी छन्द

समकित सार धर्म का बीजा, याते पाप-मैल सब छीजा।
याही तें जगपूज्य कहावे, यो ही जामन मरण मिटावे।।
समकित सो नाहीं धन कोई, समकित कल्पवृक्ष सम होई।
समकित के गुण मुनिगण गावें, समकित जामन मरण मिटावे।।
समकित ही सब कारज सारे, समकित मिथ्यारोग निवारे।
समकित शुद्ध धर्म कहलावे, समकित जामनमरण मिटावे।।
समकित रतन जास मन माहीं, ता सम अभूषण जग नांही।
समकित सुर-शिव थान दिखावे। समकित जामनमरण मिटावे।।

समकित बिन मुनि को शिव नाहीं, समकित सहित जीव शिव पाहीं।
समकित देव धर्म बतलावे। समकित जामनमरण मिटावे।।
समकित अग्नि कर्म निज जारे, समकित मोह-मल्ल को मारे।
समकित ही भ्रम दूर हटावे। समकित जामनमरण मिटावे।।
समकित ते हरि को पद होई, समकित फल अहिमिन्द्र सु होई।
समकित सहित मुक्तिपद पावे। समकित जामनमरण मिटावे।।

दोहा

समकित मेरे शीश पर करो वाय यह आस। समकित गुण ही मुख रहे, जब तक तन में स्वास।
ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यम्।

श्री सम्यग्ज्ञानपूजा प्रारम्भ

मति श्रुति अवधिज्ञान मन लाय, मनपर्यय केवल समुझाय।
ये ही पांचों सम्यग्ज्ञान, पूजों थाप यहाँ हित आन।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टबिधसम्यग्ज्ञान! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।
पुष्पांजलि क्षिपामः।

भुजंगप्रयात छन्द

लिया नीर चोखा, पदम कुण्ड केरा। महा निर्मला गन्ध, जुत मर्म हेरा।।
भर्यो स्वर्ण झारी, घनी भक्ति लाई। जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्यदाई।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।
भला गन्ध धारी, लिया चन्दना है। घिसा नीर से फेर, कर वन्दना है।।
धर भक्ति उर से, भले पात्र लाई। जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्यदाई।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।
भले तन्दुला ऊजरे खण्ड नाहीं। धरें गन्ध नीकी भली शोभ मांहीं।।
लिये हाथ अपने घनी भक्ति भाई। जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्यदाई।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।
भले गन्धयुत फूल ले माल कीनी। घने वर्ण के कोमला भक्ति चीनी।।
धरे हाथ माहीं भली भक्ति गाई। जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्यदाई।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।
नैवेद्य नीका हितू जान जिय का। भले मोदकादी रस डारि नीका।।
धरें पात्र में हाथ ले भक्ति गाई। जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्यदाई।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
करे दीप तपनाश शुभ रत्न केरा। धरे थाल मांही खुशी चित्त मेरा।।
करों आरती हर्ष सह भक्ति पाई। जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्यदाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धरी धूप दशधा भली गन्ध धारी। लिये चन्दनागुरु सुगन्धी है भारी।।
करों वीनती अग्नि में खेय भाई। जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्यदाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

लिये श्रीफला लोंग खारक बदामा। इन्हे आदि फल और बहुजात कामा।।
धरे पात्र मांही घनी भक्ति लाई। जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्यदाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

लियो नीर चन्दन अखत पुष्प जानो। नैवेद्य फल दीप अरु धूप मानो।।
करो अर्घ्य सुन्दर घनी भक्ति गाई। जजों ज्ञान सम्यक, घना सौख्यदाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रत्येकार्घ्य बेसरी छन्द)

सपरस इन्द्रिय तें सब जाने। विषय आठ ताकी विधि माने।।
सम्यक-सहित ज्ञान जो होई। सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।

ओं ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रसना तें जो विषय पिछाने। पांच भेद सब अंश सु आने।।
सम्यक-सहित ज्ञान जो होई। सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।

ओं ह्रीं रसनेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय जाने जो भाई। दोय भेद ताकी विधि गाई।।
सम्यक-सहित ज्ञान जो होई। सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।

ओं ह्रीं घ्राणेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षू विषय पञ्चविध जाने। लाल पीत श्यामादिक माने।।
सम्यक-सहित ज्ञान तें होई। सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।

ओं ह्रीं नेत्रन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रोत्रेन्द्रिय तैं शब्द पिछाने। तीन भेद ताके पहिचाने।।
सम्यक-सहित ज्ञान तैं होई। सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।

ओं ह्रीं श्रोत्रेन्द्रियद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो जो मन विकल्प तें जोवे। भई होयगी अब जो होवे।।
सम्यक-सहित ज्ञान तें होई। सो मतिज्ञान जजों मद खोई।।

ओं ह्रीं श्रीमनोद्वारसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छन्द

ग्यारह अंग पूर्वादि सु जान। अंग बारहों सुरति बखान।।
ये सब सम्यक सहित सुभाय। सो श्रुतज्ञान जजों हर्षाय।।

ओं ह्रीं श्रीअंगपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

खावे जतन जतन तें चले। बोले जतन जतन तें हले।।
अचारांग क्रिया यों कही। सो श्रुत सम्यक पूजों सही।।

ओं ह्रीं आचारांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अध्ययन विधि विनयादिक और। निज परिणति वेदन जग मौर।।
सूत्रकृतांग विषें यों कही। सो श्रुत सम्यक पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीसूत्रकृतांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जीव थान उन्नीस बताये। तथा चार सौ षट् श्रुत गाये।।
अंग स्थान मांहिं यों कही। सो श्रुत सम्यक पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीस्थानांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

होवें जो जो धर्म समान। द्रव्य क्षेत्र कालादिक मान।।
समवायांग यथाविधि कही।। सो श्रुत सम्यक पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीसमवायांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति नास्ति आदिक स्याद्वाद। एकानेक करे जो वाद।।
व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग यों कही। सो श्रुत सम्यक पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीव्याख्याप्रज्ञप्तिश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अतिशय जिनध्वनि प्रगटाय। समवसरण आदिक गुण गाय।।
ज्ञातृकथा अंग में यों कही। सो श्रुत सम्यक पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीज्ञातृकथाश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

एकादश प्रतिमा विधि जोय। और बहुत श्रावक विधि होय।
अंग उपासक मैं यों कही। सो श्रुत सम्यक पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीउपासकाध्ययनांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

एक एक जिन समय मंझार। अन्तःकृत केवलि षट् चार।।
अन्तः कृतांग माँहि यों कही। सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीअन्तःकृतदशांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

एक एक जिन वारें सोय। दश दश मुनि अहमिन्द्र जु होय।।
अंग अनुत्तर में यों कही। सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीअनुत्तरोत्पादकदशांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गई वस्तु लिख मूठी माँहि। पूंछे प्रश्न कहे मुनि ठाँहिं।
प्रश्न व्याकरण अंग यों कही। सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीप्रश्नव्याकरणांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अरु अशुभ कर्मफल जान। तीव्र जु मन्द विपाक बखान।।
सूत्रविपाक अंग यों कही। सो श्रुत सम्यक् पूजों सही।।

ओं ह्रीं श्रीविपाकसूत्रांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

व्यय ध्रौव्य अरु उत्पाद द्रव्यलक्षण सही। गुण पर्यय द्रव माँहि, और बहुविध कही।।
यह पूरब उत्पाद, माँहि व्याख्यान है। सो श्रुत सम्यक ज्ञान, जजों थुति आन है।।
ओं ह्रीं श्रीउत्पादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जामें दुर्नय तथा, सुनय व्याख्यान है। अस्तिकाय अरु द्रव्य, तत्त्व शुभ ज्ञान है।।
अग्रायण पूरब में, यों व्याख्यान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।
ओं ह्रीं श्रीअग्रायणीपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्य आत्म पर वीर्य, काल वीरज सही। वीरज उभय अपार, तपो वीरज कही।।
वीरज गुण अनुवाद, माँहि यों ज्ञान है।। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।
ओं ह्रीं श्रीवीर्यानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
अस्ति नास्ति वस्त्वादि, स्वभाव विषें सही। नित्यानित्य अनेक, एक आदिक कही।।
अस्ति नास्ति पूरब में, ऐसो ज्ञान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।
ओं ह्रीं श्रीअस्तिनास्तिप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
आठ ज्ञान फल विषय, नाम वर्णन सही। और अवान्तर भेद, ज्ञान के सब कही।।
ज्ञानप्रवाद सु पूरब, में व्याख्यान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।
ओं ह्रीं श्रीज्ञानप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
भेद वचन सत असत, उभय अनुभव सही। वचनगुप्ति अरु भाषा, द्वादश जो कही।।
सत्प्रवाद सु पूरब, इहविध ज्ञान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।
ओं ह्रीं श्रीसत्प्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
निश्चय आत्म अभेद, भेद व्यवहार है। जीव पूज्य वा नहीं, पूज्य निर्धार है।।
इस विधि आत्मप्रवाद, पूर्व में ज्ञान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।
ओं ह्रीं श्रीआत्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
कर्मभेद तिन नाम, बन्ध चवविध सही। उदय सत्त्व को आदि, कर्मरचना सही।।
पूरब कर्म प्रवाद, माहि व्याख्यान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।
ओं ह्रीं श्रीकर्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जामें समिति गुप्ति, अनुप्रेक्षादिक कही। पाप त्यागविधि और, महातप अघ नहीं।।
प्रत्याख्यान सु पूरब, इस विधि ज्ञान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।
ओं ह्रीं श्रीप्रत्याख्यानप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
विद्या-साधन मन्त्र, जन्त्र विधि जानिये। स्वर लक्षण अरु स्वप्न, आदि विधि मानिये।।
पूरब यह विद्यानुवाद, शुभ थान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।
ओं ह्रीं श्रीविद्यानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जिन कल्याणक उत्सव, त्रेसठ पद सही। ज्योतिषि गमन विचार, शकुन आदिक कही।।
यों पूरब कल्याण, वाद में ज्ञान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।

ओं ह्रीं श्रीकल्याणानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आयुर्वेद सु मन्त्र, जन्त्र तन्तर घने। इस साधन की कला, और महिमा भने।।
पूरब प्राणानुवाद, मांहि बहु ज्ञान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।

ओं ह्रीं श्रीप्राणानुवादपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द तथा व्याकर्ण, संगीत कला सही। चौंसठ तिय की कला, काव्य की विधि कही।
क्रियाविशाल सु पूरब, मति को थान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।

ओं ह्रीं श्रीक्रियाविशालपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक का कथन, मोक्ष व्याख्या सही। गणितशास्त्र के सूत्र, और सब विधि कही।।
त्रिलोकबिन्दु यह पूर्व, महासुख थान है। सो श्रुत सम्यग्ज्ञान, जजों थुति आन है।।

ओं ह्रीं श्रीत्रिलोकबिन्दुपूर्वश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जोगीरासा छन्द

समताभाव सकल जीवन पै, सम दम संयम भावे।
आरत रौद्र ध्यान निरवारै, धर्म शुक्ल उर लावे।।
ऐसो कथन कियो जिस माहीं, सो सामायिक जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीसामायिकप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जामें चौबीसों जिन स्तवन, अतिशय की विधि गाई।
गर्भ जन्म तपज्ञान मोक्ष की, और घनी विधि आई।।
अंग चतुर्विंशति स्तवन में, जिनचर्चा पहिचानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतिस्तवप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रतिमाजिन मान लीजिये, भक्ति घनी मन लाई।
तीर्थंकर इक को सिर नावत, हाथ जोडि कर भाई।।
वन्दनांग ये नाम जास को तामें या विधि जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीवन्दनाप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जा परमाद थकी अघ उपजे, ताके मेंटन भाई।
पश्चाताप विधी ईर्यापथ, पाक्षिक वार्षिक गाई।।
कहा अंग प्रतिक्रमण प्रभू ने, दोषहरण को थानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीप्रतिक्रमणप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चरित्र सुतप की, विनय कीजिये भाई।
गुरुजन गुणिजन को भी कीजे, विनयभाव शुभ लाई।।

इत्यादिक इस विनय अंग में, विनयाचर बखानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।
ओं ह्रीं श्रीविनयप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
नरदेवों के वन्दन की विधि, नति आवर्त सु भाई।
परदक्षिण शुद्धी आदिक भी, श्रुति जैसी बतलाई।।
क्रम-क्रम सकल कही है यामें, शुभदायक सुखदानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।
ओं ह्रीं श्रीकृतिकर्मप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मुनि यों भोजन पानी लेवें, यों चालें यों सोवें।
ऐसे वचन कहें मुख सेती, ऐसे अघमल धोवें।।
मुनि आचार भनी इस मांही, दश वैकालिक मानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।
ओं ह्रीं श्रीदशवैकालिकप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मुनी सहें वावीस परीषह, तिन फल सकल जताये।
देव अचेतन नर तिर्यक्कृत, जो उपसर्ग बताये।।
उत्तराध्ययन प्रकीर्णक मांहीं, सकल शुभाशुभ जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।
ओं ह्रीं श्रीउत्तराध्यनप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
यह आचार मुनीश्वर जोगा, यह जोगा है नाहीं।
हो अयोग्य आचरण कभी तो, दण्डयोग मुनि माहीं।।
इत्यादिक अंग कल्पविहारैं, कहो सकल चित मानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।
ओं ह्रीं श्रीकल्पव्यवहारप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मुनि की किरिया द्रव्यक्षेत्र पुनः काल भव यों जागा।
सो ही विधि योगीश्वर ठाने, उपजे आत्म-प्रयोगा।।
कल्पाकल्प प्रकीर्ण अंग में, ऐसी वार्ता जानों।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।
ओं ह्रीं श्रीकल्पाकल्पप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जिनकल्पी अरु स्थविरकल्पी, शिक्षा दीक्षा दानी।
पोषण आतम शुद्धि समाधी, किरियासकल बखानी।।
उत्तमचर्या या आराधन, ओर घनीविध जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।
ओं ह्रीं श्रीमहाकल्पप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्निकाय देवकुल में ज्यों, पावे सुरतन भाई।
पूजा ज्ञान तपस्या समकित, निर्जर हेतु बताई।।
पुण्डरीक अंग मांहि कह्यो यह, कथन जीव सुखदानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीमहापुण्डरीकप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

किस तप ध्यान थकी मुनि उपजे, अहमिन्दर पद पाई।
किस तपतैं वा कौन ध्यानतैं, इन्द्रादिक हो भाई।।
इत्यादिक विधि जामें गाई, पुण्डरीक सो जानो।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीमहापुण्डरीकप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो जो अघ परमाद बढ़ावे, ता नाशन विधि गाई।
जो जो पाप मिटे या विधितें, सो सो सकल बताई।।
नाम निषिधिका कहातास का, ज्ञानागार बखानों।
या अँग को मैं लेय अर्घ्य कर, पूजों मन वच आनो।।

ओं ह्रीं श्रीनिषिद्धिकाप्रकीर्णकांगश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गीतिका छन्द

हैं आठ भेद निमित्त के सो, ज्ञान अद्भुत है सही।
तिसज्ञानकी महिमा लखतही, भाव मिथ्या ना रही।।
यह भलो ज्ञान अनूप फलदा, होय सम्यक सहित जो।
सो जजों मन काय यह श्रुत, अरघ तें थुति कहक जीं।

ओं ह्रीं श्रीअष्टांगनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आकाश में रवि चन्द्र तारा, मेघ-पटलादिक सही।
सन्ध्या समय के चिन्ह और, अनेक बातन को कही।।
जो होय इनके निमित्त सेती, शुभाशुभ सो जानिये।
अन्तरीक्ष हेतुक ज्ञान पूजों, श्रेष्ठ सम्यक् मानिये।।

ओं ह्रीं श्रीअन्तरीक्षनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि में रत्नादि कंचन, धातु खानि सुजान है।
इन आदि और अनेक रचना, भूमि की पहिचान है।।
सो लखे ऐसो निमित्त ज्ञानी, शुभाशुभ जाने सही।
भौमको यह निमित्त लखि करि, जजों सम्यक् श्रुत सही।।

ओं ह्रीं श्रीसम्यग्भौमनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मनुज तिर्यक देह के शुभ, अशुभ चिन्ह सु जानिये।
नख सुकेशादिक सुलखि कर, इष्ट अनिष्ट बखानिये।।

यह अंग निमित्त ज्ञान अद्भुत, महासुखदा जोय जी।
मैं जजों अंग निमित्त सम्यक, ज्ञान श्रुत सो होय जी।।
ओं ह्रीं श्रीसम्यग्निमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
सुन शब्द नर तिर्यंच के जो, शुभाशुभ जाने सही।
खर शब्द घूघू काक श्याल, सु सेहिका की ध्वनि कही।।
इन आदि वच सुन कहे सुखदा, निमित्तस्वर जो जिन कही।।
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक, अर्घ्य मन वच काय ही।।
ओं ह्रीं श्रीसम्यक्स्वरनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
तिल मसा भौंरी गांठ रेखा, पांव कर में जोय है।
तिस निमित्तज्ञानसुसकल जानें, शुभाशुभ जो होय है।।
यह ज्ञान व्यंजन निमितनी को, शुभाशुभ निर्धार जी।
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक, अर्घ्य मन वच काय जी।।
ओं ह्रीं श्रीसम्यग्व्यंजननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
तन वृषभ स्वस्तिक कलश वज्र, सुमच्छ इन आदिक सही।
सब जोय लक्षण देखि इनको, शुभाशुभ भाषे यही।।
यह ज्ञान लक्षण निमित आछो, भले फल को दाय है।
मैं जजों यह श्रुतज्ञान सम्यक, अरघ ले सुख पाय है।।
ओं ह्रीं श्रीसम्यग्लक्षणनिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
तहँ पट सु भूषण शीश के कर, वर पगों के जान जी।
तिनको जु काटें मूषाकादिक, भेद तिनको आन जी।।
यह भेद शुभ अर अशुभ भाखै, देखि के सुख दुख सहे।
यह छिन्न निमित्त सुज्ञान नीको, पूज्यमन वचतन चहे।।
ओं ह्रीं श्रीसम्यक्छिन्ननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जो लखे सुपना शुभाशुभ को, भेद सुख दुख आन जी।
इन आदि अंग अनेक समझे, सकल भेद सु आज जी।।
यह ज्ञान निमित्त निमित्तजी को, बड़े अतिशय धार जी।
सो जजों सम्यक सहित मनवच, श्रुतज्ञान सु सार जी।।
ओं ह्रीं श्रीसम्यक्स्वप्ननिमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ये ही आठो निमितज्ञान हैं, जग में अचरजकारी।
तिनको देखि भरम सब जावे, और घने गुण धारी।।
सम्यक जुत यह महाज्ञान नद याको मुनि अवगाहैं।
ऐसो लखि के मैं भी मन वच, अर्घ्य जजों हरषाहैं।।
ओं ह्रीं श्रीसम्यङ्-निमित्तश्रुतज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लोक असंखे क्षेत्र सुजाने, काल असंखो भाई।
द्रव्य लखे परमाणू, सूक्षम, गांव आदि अधिकाई।।
ऐसो सर्वावधी ज्ञान लखि, मुनि बिन और न पावे।
तातें मैं या ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीसर्वावधिज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लोक असंख्यो जाने क्षेत्रो, वरष असंख्यो कालो।
कार्माण तन सुख में जोवे, द्रव्य अपेक्षा बालो।।
परमावधि सु ज्ञान बड़ा है, सर्वावधि लघु पावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हो, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीपरमावधिसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोक क्षेत्र की जाने, काल पल्य परिमाने।
द्रव्य अपेक्षा कार्माण तन, भाव यथावत् जाने।।
अति उत्तम यह ज्ञान विषय है, देशावधी जनावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीदेशावधिसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उपजे जबतें अवधिज्ञान उर, आप महा सुखदाई।
तबहीं तैं यह बढ़े आयु लों, नाहीं कबहुं घटाई।।
वर्धमान यह अवधिज्ञान है, समकित जुत मुनि पावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीवर्धमानसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हीयमान जी अवधि कह्यो है, ताको यह सोभावा।
उपजे तब ही तें घटवो कर, अंश सकल निरदावा।।
याका अंश बढ़े नहिं कबहू, जिनवानी यों गावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीहीयमानसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उपजे जा भव में उर आवे, अवधिज्ञान सुखकारी।
आयु अन्त तक रहे साथ में, पीछे परभव लारी।।
अनुगामी है नाम इसी का, अवधिज्ञान कहलावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीअनुगामिसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जब जिस क्षेत्र रमें उपजे उर, ज्ञान अवधि सुखदाई।
तिसही थानक में थिति जाकी, और क्षेत्र नहिं जाई।।
अवधिज्ञान यह अननुगामिनी, परभव संग न जावे।

तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीअननुगामिसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जितने अंशों में पैदा हो, उतना ही प्रिय भाई।
आयु अन्त लों तहाँ रहे थिर, घट बढ़ हो न कदाई।।
ज्ञान अवधि यह जान अवस्थित, सम्यक रूप लहावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीअवस्थितसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान उपे जबतें उर, कबहूं घट बढ़ जाई।
अंश बढ़े कबहूं बहु जानो, कबहूं अंश घटाई।।
यह अनवस्थित अवधिज्ञान है, सम्यक जुत फल पावे।
तातें मैं यह ज्ञान जजत हों, यातें मो ढिग आवे।।

ओं ह्रीं श्रीअनवस्थितसम्यगवधिज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरलभाव मन विकल्प जाने, कुटिलभाव नहिं जाने।
उत्तम सात आठ योजन भव, क्षेत्र काल की जाने।।
ऋजुमति मनपर्यय यों जाने, मनचिन्तित प्रिय भाई।
पर मन के विकल्प जो जाने, ताहि जजों सुखदाई।

ओं ह्रीं श्रीऋजुमतिमनपर्ययसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती मनपर्यय ज्ञानी, पर के मन को पावे।
सरल गूढ जो मन के विकल्प, सारे भेद लखावे।।
क्षेत्र अढ़ाई द्वीप काल भी, पल्य असंखो जानो।
ऐसे विकल्प जाने पर मन, ज्ञान पूज्य सो जानो।

ओं ह्रीं श्रीविपुलमतिमनपर्ययसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीनलोकनिःसीम अलोक की, काल तीन की जाने।
जीव अजीव तत्त्व बरतेंगे, वर्तें बरतत जाने।।
गुणपर्याय लसें सो सो तब, जो जो स्वांग बनाये।
इत्यादिक सब जाने केवल, ज्ञान जजों थुति लाये।।

ओं ह्रीं श्रीकेवलज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसे मतिश्रुत अवधिज्ञान लखि, मनपर्याय सुखदाई।
केवलज्ञान अनादि अपारी, जानत खेद न पाई।।
याविध पाँचों ज्ञान सुसम्यक, पूज्य कहे जिनवानी।
तातें अर्घ्य बनाय जजो ये मोहि मिलें सुखदानी।।

ओं ह्रीं श्रीसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाल

दीखे ज्ञान थकी सकल, ज्ञानभानु सो जान। मैं पूजों मन वचन तन, मो उर प्रकटो आन।।

चाल मुनियानन्दी

ज्ञानी की आन सब लोक परमान जी, ज्ञान ही कर्म को मूल तें ढाय जी,
ज्ञान पुण्य पाप की राह बतलाय है, ज्ञान यों जजों उर बसो मम आय है।।
ज्ञान ही देय शिव स्वर्ग थानक मही, ज्ञान तैं चक्रधर अर्धचक्री कही।
ज्ञान ही लोक में सर्व सुखदाय हैं, ज्ञान यों जजों उर बसो मम आय है।।
ज्ञान तैं कर्म अरि जीतना जान है, ज्ञान तैं आपने पाप जिय हान है।
ज्ञान ही लोक का गुरु हितदाय है, ज्ञान यों जजों उर बसो मम आय है।।
ज्ञान ते वृत्त तप ध्यान शुभ होय जी, ज्ञान ही सकल उर भरम को खोय जी।
ज्ञान अधमैल को धोय सुध लाय है, ज्ञान यों जजों उर बसो मम आय है।।
ज्ञान चक्षू भले गूढ अर्थ जानिये, ता थकी भेद शुभ वा अशुभ जानिये।
ज्ञाननदवारि तें पापमल जाय है, ज्ञान यों जजों उर बसो मम आय है।।
ज्ञान ही लोक का श्रेष्ठ रत्न जानिये, ज्ञान ही धर्म सब जीवहित आनिये।
ज्ञानगज कर्मवन नाश करवाय है। ज्ञान यों जजों उर बसो मम आय है।।
ज्ञान तें लोकदुःख जाय भव आन की, ज्ञान तें मोक्षतिय वरत है जान जी।
ज्ञानरवि होय मिथ्यात्वतम जाय है, ज्ञान यों जजों उर बसो मम आय है।।
ज्ञानसम कर्मक्षयकर नहीं जानिये, मोहमदहरन को भलो भट मानिये।
ज्ञान सों सकल उर दुःख मिट जाय है, ज्ञान यों जजों उर दसों मम आय है।।
ज्ञान जगभेद सब जान भ्रम भान जी, ज्ञान तें मिटैं उर क्रोध छल मान जी।
ज्ञान उर होय तब धर्म मन भाय है, ज्ञान यों जजों उर बसो मम आय है।।
ज्ञान मति भेद शत तीन छत्तीस जी, ज्ञान श्रुत अंग पूर्व भेद सर्व ईश जी,
अविध के भेद त्रय तथा बहु थाय हैं, ज्ञान यों जजों उर बसो मम आय है।।
मनपर्यय ज्ञान के भेद दो जानिये, ज्ञान शुद्ध केवला एकविध मानिये।
इन विषैं गुन घना भलो फलदाय है, ज्ञान यों जजों उर बसो मम आय है।।

दोहा

देव धर्म गुरुज्ञान तैं, पाये जिय शिवधाम। तातें मैं शुध ज्ञान को, मन वच करों प्रणाम।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानाय जयमालार्घ्यम्।

।।इति सम्यग्ज्ञानपूजा समाप्ता।।

सम्यक्चारित्र पूजा प्रारम्भ

(अडिल्ल छन्द)

पंच महाव्रत सार समिति पाँचों सही, गुप्ति तीन मिल तेरहविध जिनध्वनि कही।
यो ही शुभ चारित्र भवोदधि नाव है, सो मैं पूजों थाप यहां कर चाव है।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जोगीरासा की चाल

क्षीरसमान मनोज्ञ सुनिर्मल, त्रस जीवन बिन जानो।
उज्ज्वल क्षीरोदधिको जल ले, देखत उर हरषानो।।
कनकझारि में धरकर लायो, भक्ति धार सुखदाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

बावन चन्दन अगर मिलायो, नीर सुसंग घिसायो।
ताकी गंध मत्त हो अलिगण, चउ-दिस से उड़ आयो।।
ऐसो चन्दन गन्धसहित जो, कनकपात्र धरि लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल मुक्ताफल से, खण्ड बिना चुनवाये।
श्रेष्ठ सुगन्धित विविध जातिके, जो मन अति हरषाये।।
ऐसे अक्षत कनकथाल धरि, प्रचुरभक्ति उर लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय अक्षतम् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल मनोहर अति सुखदाई, नाना-रंग के प्यारे।
गन्ध महा जिन मांहि घनी है, धार सुभग-आकारे।।
तिन फूलन की माला करि मैं, भक्ति घनी मन लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

नानारस मिलवाय बनाये, चरु अति ही सुखदाई।
मोदक आदि मनोहर जानो, ज्यों नैवेद्य सुगाई।।
सो हम नीके पातन में धरि, विनयसहित पुनदाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक रतन तने करि लीने, घनी ज्योति बहु धारी।
कनकथाल भरि निजकर लायो, करन आरती भारी।
मन वच तन शुभ भावन से मैं, भक्ति हिये बहु लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूप भली दाहे तन बह्नी, तातें भगति पियारी।
नानागंध तिस मांहि मेलि के, कीनी अति सुखकारी।
ऐसे दशधा धूप हाथ ले, अग्नी माहि जलाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग बदाम सुपारी, खारक पिस्ता जानो।
और अनेक भले फल करले, आयों अति हरषानो।।
नीके पात्र धार के तन मन, भाव भक्ति सब लाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षतसुपहुप चरु, दीप धूप फल प्यारे।
मिला सर्व को अर्घ्य बनायो, सुन्दर पात्र पसारे।।
अपने कर ले करो आरती, नानाविध गुण गाई।
पूजों सम्यक्चारित मन वच, काय अंग सब नाई।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य (चाल जोगीरासा)

जिन आज्ञाजुत मुनि वच बोले, सुन सब जिय सुख पावें।
हिंसावचन नहीं ऋषि भाखें, करुणा अति मन ल्यावें।।
शुद्ध अहिंसा व्रत तब होवे, वच अपने वश राखें।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं वचनाहिंसामहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन से हिंसाभाव निवारे, करुणाजुत मन धारी।
महावरत तब होय अहिंसा, मन राखें हितकारी।।
मुनि किरपानिधि सबजगबंधू, मन तें दोष न भाखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं मनोहिंसारहिताहिंसामहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट्कायिक जीवन पीड़ाहर, मारग देख सु चालें।
सूक्ष्म बादर सब पर करुणा, चार हाथ लखि हालें।।
शुद्ध अहिंसा व्रत तब होवे, यह जिनवाणी भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं ईसासमितिसहिताहिंसामहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पिछीकमंडलुपुस्तक निजकर, जोवें धरें उठावें।
दयाभाव सब जीवन ऊपर, तातें यह विधि लावें।।

महावरत तब शुद्ध अहिंसा, त्रस थावर की राखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितियुताहिंसामहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जीवदया के हेतु महामुनि, दोष हटाकर खावें।
समतासागर सब जियबन्ध, खान पान सुध पावें।।
तबहिं अहिंसाव्रत की शुद्धी, होय इसी विधि राखें।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं एष्णसमितिसहिताहिंसामहाव्रतयुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम महाव्रत जान अहिंसा, सो या विधि समझायो।
पांच भावना ताकी ऐसी, इनसे शुद्ध बतायो।
यही अहिंसा महासुव्रत है, सब जीवन पत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं पंचभावनायुताहिंसामहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधसहित वच असत कहा है, करे प्रतीति न कोई।
तातें क्रोध बिना सच भाषे, वचन महाशुभ होई।।
ऐसो सत्य-महाव्रत धारी, जग गुरुराज सुभाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं क्रोधरहितसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ तनें वश सांच न बोले, ना परतीति शुभाई।
लोभ बिना परमारथ भाषे, सत्य-वचन सुखदाई।।
या विध सत्य महाव्रत उत्तम, भवदधि परता राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं निर्लोभभावनायुतसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भयजुत प्राणी सांच न बोले, कहे झूठ उकताई।
भय से भीत अन्यथा भाषे, यह निश्चय लखि भाई।।
भीति बिना जो होय महाव्रत, सो जिय का सत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं भयरहितसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हास्य विषें सब सांच न जाने, हास्य सत्य को घाते।
हास्य तहां सतवैन न उपजे, हास्य बिना सत पावे।।
तातें हास्य बिना जु महाव्रत, शुद्ध होय जिन भाखें।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं हास्यरहितसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वच शास्त्रानुकूल ही कहना, वच अनुवीचि प्रमानो।
शास्त्रविरुद्ध कहे नहिं कबहूं, सत्य-विरतधर मानो।।
जो अनुवीचि वच प्रिय होवे, सत्य-महाव्रत भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं अनुवीचिभाषणयुतसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पांच भावना सत्य विरत को पाल कहे सच वचना।
सत्यमहाव्रत-सहित भावना, पाप हरे सुख झरना।।
ऐसे सत्य-महाव्रत की जो, पल पल महिमा राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं अनुवीचिभाषणयुतसत्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सूने घर में नाहीं जावे, जाने चोरी त्यागी।
भूमि परी विसरी परवस्तू, लेय नहीं विन रागी।।
सो अचौर्य महाव्रतधर यति, भव प्रतिज्ञा राखे।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, करके व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं शून्यगृहप्रवेशरहिताचौर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ऊजड़गृह में वास करे तो, चोरी दूषण पावे।
तातें छोड़े घर के मांही, मुनि नहिं ध्यान लगावे।।
व्रत अचौर्य यह जान महाव्रत, जिनमन वश में राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं निर्जनगृहवासरहिताचौर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निजथल पर का आना रोके, सो चोरी अघ पावे।
व्रत अचौर्य में यातें यतिजन, औगुण मोटो लावे।।
शुद्ध अचौर्य महाव्रत जानो, जो यह दोष न राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं परोपरोधाकरणयुताचौर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दाता दे सो भोजन ले मुनि, आप न सेन बतावे।
देय इशारा भोजन ले तो, चोरी दूषण पावे।।
दोष बिना लीय शुद्ध भोजन, सो अचौर्यव्रत भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं भैक्ष्यशुद्धियुताचौर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आपस मांहो धर्मी जनसों, विसम्बाद ना करहीं।
समता धार त्याग यह दूषण, व्रत अचौर्य मन धरहीं।।
धर्मी से गोवत्सप्रीतिसम, प्रीति किये सुख चाखे।

या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं सधर्माविसंवाददोषरहिताचौर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पंच भावना ऐसी इन जुत, वृत्त अमल सु कहावे।
इन्हें भुलाये चोरि दोष हो, नाहिं निमित्त मिलावे।।
दोष गये सुध होय अचोरी, महाविरत ध्वनि भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं पंचभावनायुताचौर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नारिकथा सुनके जो मनमें, तिय अनुराग बढ़ावे।
ताको शील लहे दूषण को, या बिन शील रहावे।।
रामाराग कथा से वर्जित, ब्रह्मचर्य शुभ भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं स्त्रीरागकथाश्रवणदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अति सुन्दर नारी तन देखे, वार वार धरि रागा।
ताकि शील सुरत्न विरत को, मोटो अवगुन लागा।।
ऐसे दोष बिना सुशील व्रत, भवदधि परता राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं स्त्रीमनोहरांगनिरीक्षणदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिपद पहले राजसमय में, भोग किये ये भारी।
तिनकी याद किये से दूषण, शील लहे दुखकारी।।
पूर्वरतानुस्मरण रहित यों शील महाव्रत राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं स्त्रीमनोहरांगनिरीक्षणमलदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन नाहिं गरिष्ट करें मुनि, शील सुरक्षा काजे।
दधि घृत मेवादिक के खाये, ब्रह्मचर्य व्रत लाजे।।
तातें ऐसा भोजन तजि के, शील महाव्रत राखें।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं वृष्येष्टरसभोजनदोषरहितब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अपने तन के मंजन चूरन, न्हवन धोवना लावे।
ऐसी किरिया जो मुनि राखे, शीलदोष को पावे।।
तातें तन श्रृंगाररहित जो, शील महाव्रत राखे।

या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं स्वशरीरसंस्कारत्याग महाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पंच भावना ऐसी पालें, शील करन शुभ भावे।
ताको मुक्ति मनोहर रमणी, वेगहिं पास बुलावे।।
ऐसो शील महाव्रत नीको, जो मुनि दृढ़ करि राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं पंचभावनायुक्त ब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल कठिन चीकरी रूखो, लघु शीतोष्ण महानो।
ऐसे आठ विषय सों विकरत, परिग्रहत्याग सुजानो।।
आतम के अनहित के कारण, तामें मन नहिं राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

खट्टा मीठा कड़ुआ जानो, अरु कषायलो भाई।
और चरपरा पाँच विषय में, रसना बहु ललचाई।।
ये रसना के भाग शुभाशुभ, भोग परिग्रह राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं रसनेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नासा इन्द्रिय विषय शुभाशुभ, भोग परिग्रह सोई।
गंध विषय ललचाय जीव ते, परिग्रही अतिमोही।।
तातैं इनके त्यागि भये जे, परिग्रहत्यागी भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं घ्राणेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र सुजाने लाल पीत वा, श्याम सब्ज अरु श्वेता।
तामें राग द्वेष उपजावे, परिग्रही जनचेता।।
इनि को त्याग सुत्याग परिग्रह, मन वच तन कर राखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं नेत्रेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीन शब्द हैं सचित अचित अरु, मिश्र शब्द सुखदाई।
इनमें राग रु द्वेष करे मुनि, सोइ परिग्रह भाई।।

ताते इनके त्यागे परिग्रह, त्याग महाव्रत भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं श्रीत्रेन्द्रियशुभाशुभविषयरहितपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पांच भावना पंचम व्रत की, त्याग कहो इन मांही।
इन जुत परिग्रहत्याग महाव्रत, शुद्ध होत शक नाहीं।।
पांच भावना सहित होय जो महाव्रती मुनि भाखे।
या जुत सम्यक्चारित सोई, पूजों व्रत अभिलाखे।।

ओं ह्रीं पंचभावनायुतपरिग्रहत्यागमहाव्रतसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

चार हाथ भू शोध, पांव मुनिवर धरें। इत उत देखन त्याग, कायनिज वश करें।।
सो शुध ईर्यासमिति, महा सुखदाय हैं। या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं यत्रतत्रावलोकनदोषरहितेर्यासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जब मुनि करें विहार, दयानिधि सार जी। चाले नहीं सुताव, बड़े डग धार जी।।
ऐसो दोष निवार, समिति पग धार है। या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं शीघ्रगमनदोषरहितेर्यासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रागवचन सुन यतो, राह चलते नहीं। राग द्वेष कर चंचल, चित करते नहीं।।
तातें ईर्यासमिति, शुद्ध सुखदाय हैं। या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं पथिकगमनकालरागवचनश्रवणचित्तचांचल्यदोषरहितेर्यासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

राह चलत वच दुष्ट, श्रवण करके सही। द्वेषभाव करि करे, चित्त को चल नहीं।।
तब शुभ ईर्यामिति, होय हितदाय है। या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं मार्गगमनकालदुष्टवचनश्रवणदोषरहितेर्यासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

राह चलत श्री मुनिवर, कबहुँ न यों करें। पड़ी वस्तु पग कर तें, कबहुँ न ले धरें।।
सो यह दोष निवार, समिति सुध लाय है। या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं मार्गस्थवस्तुग्रहणदोषरहितेर्यासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व दोष तें रहित, मुनी मग जाय है। जूना के परमान, भूमि दिखवाय हैं।।
ऐसी समिति दयालु, भाव कर लाय हैं। या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं सर्वदोषरहितेर्यासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो जिस देश मंझार, वस्तु को नाम है। सो ही कहना सत्य, वचन शुभधाम है।।
जनपद सत् कथनीय, समिति सुखदाय हैं। या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।

ओं ह्रीं जनपदसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रौढ़िक जाको नाम, सकल जन यों कहे। सोई कहना संवृति, सत सुधि में रहे।।
ऐसो भी वच भाषा, समिति सु जानिये।या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।
ओं ह्रीं संवृत्तिसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
चित्र मनुज हय हाथी, वृष के कीजिये। फिर तिनको नर पशू, नाम रख लीजिये।।
यही थापना सत्य, समिति वच जानिये। या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।
ओं ह्रीं स्थापनासत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जाको जग में नाम, प्रसिद्ध सुगाइये। सोई कहना नाम, दोष नहिं पाइये।
नामसत्य यह सार, समिति वच जानिये। या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।
ओं ह्रीं नामसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
यह रंग काला पीला, लाल हरा सही। ऐसा कहना रूप, सत्य भाषा सही।।
ये ही भाषा सत्य, वचन मन आनिये। या जुत सम्यग्वृत्त, जजों शिवदाय है।।
ओं ह्रीं रूपसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
यहै पदारथ बड़ा, यहै छोटा सही। कहे अपेक्षा, वचन, घने परगट मही।।
यही सत्य परतीति, समिति वच जानिये। या जुत सम्यग्वृत्त, जजे हित मानिये।।
ओं ह्रीं प्रतीत्यसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
नैगमनय की रीति, वचन सो भाषिये। कर मन ठीक जू वस्तु, हिये में रखिये।।
सत् है सो व्यवहार, समिति वच आनिये। या जुत सम्यग्वृत्त, जजे हित मानिये।।
ओं ह्रीं व्यवहारसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
शक्र विषें बल ऐसा, भू उल्टी करे। भूमी जान अनादि, नाहिं कबहूँ टरे।।
ऐसा कहना संभावित, सत जानिये। या जुत सम्यग्वृत्त, जजे हित मानिये।।
ओं ह्रीं संभावनासत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मेरु असंखे द्वीप, नरक सुर थल सही। कंदमूल में जीव, अनन्ते जिन कही।।
भावसत्य संजोय, समिति वच जानिये। या जुत सम्यग्वृत्त, जजे हित मानिये।।
ओं ह्रीं भावसत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
का को किसकी उपमा, देकर भाषिये। ज्यों दानी सुरवृक्ष, जगत में आंकिये।।
सो उपमा सत जान, समिति वच ठानिये। या जुत सम्यग्वृत्त, जजे हित मानिये।।
ओं ह्रीं उपमासत्यभाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
प्राण जांय तो जाय, असत भाषें नहीं। भाषें तो सत्य बैन, जिसे जिनध्वनि कही।।
सो ही भाषासमिति, भव्य उर आनिये। या जुत सम्यग्वृत्त, पूज्यतम मानिये।
ओं ह्रीं भाषासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
पात्रनिमित्त सु भोजन, जो दाता पचे। तो यह दोष 'उद्देशिक', दाता सिर रचे।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं औद्देशिकदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पात्र जनों को देख रसोई जो करे। दाता 'अध्यदि' दोष, आपने सिर धरे।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं दोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जो मुनि को दे भोजन, अचित मिलायकें। 'पूतिकर्म' यह दोष, सुदातृ उपाय के।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं पूतिकर्मदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मुनि को भोजय देय, असंयमि साथ जी। तो दाता के दोष, 'मिश्र' विख्यात जी।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं मिश्रदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
थानान्तर भोजन दे, मुनि को लायकें। तो 'स्थापित' ले दोष, दातृ अधिकाय के।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं स्थापितदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
देव पितर को कियो, मुनी को दे सही। तो दाता बलि दोष, आप सिर ले सही।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं बलिदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
वेग बेग वा धीरे, मुनि को आहार दे। प्रावर्तित' अघ सोय, दातृ के सिर बँदे।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं प्रावर्तितदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मुनिभोजन का थान, प्रकाशित जो करे। प्राविष्करण' सुदोष, दातृ निजशिर धरे।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं प्राविष्करणदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
विद्या-क्रीत अहार, मुनि को दान दे। क्रीतदोष' तब दाता, के ही शिर बँदे।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं क्रीतदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ऋण कर कृत आहार, मुनी को दे सही। सो दाता 'ऋण' दोष, आप सिर ले कही।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं प्रामृष्यदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
निजी अन्न बदलाव, दान मुनि को करे। 'परिवर्तन' अघ सोय, दातृ सिर पर धरे।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं परिवर्तनदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
अन्य ग्राम तें आय, दान मुनिको करें। 'अभिघट' कहि अघसोय, आप सिर पर धरे।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं अभिघटदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बँधी वस्तु मुख खोल, दान दे लाय जी। 'उद्भिन' अघ सिर दातृ, लेय अति भाय जी।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं उद्भिनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ऊपर खन की वस्तु लाय मुनि दान दे। 'मालारोहण' नाम, दातृ अघ सिर सु ले।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं मालारोहणदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
त्रास और भयकार, दान मुनि को करे। दोष 'अच्छेद्य' सुनाम, आपने सिर धरे।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं अच्छेद्यदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जाको धनी न होय, दान दे और जी। 'अनीशार्थ' अघ दातृ, लहे तिस ठौर जी।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं अनीषार्थदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
षोडश दोष सुजान, मुनी आहार में। दाता पाले जान, सोय बुध सार में।।
सो भोजन मुनि तजे, एषणा लाय जी। या जुत सम्यग्वृत्त, जजो शिवदाय जी।।
ओं ह्रीं षोडशोद्गमनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चाल जोगीरासा

जाय यती दाता के घर में, बालक नाहिं खिलावे।
नहिं श्रृंगारे नहिं पुचकारे, बालक को न रमावे।।
'धात्री' दोष तजे मुनिवर यह, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं धातृदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दाता के घर जाय यतीश्वर, इत उत बात बतावे।
देशान्तर की कहे वार्ता, तो मुनि दोष बढ़ावे।।
'दूत' दोष यह तजे महामुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं दोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निमित्तज्ञान की बात कहे मुनि, दाता को सुखदाई।
भोजन फेर गहे घर बाके, तो सिर दोष चढ़ाई।।
निमितदोष ऋषिराज तजे यह, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं निमित्तदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दाता के घर जाके मुनिवर, कह प्रभुता की बातें।
इस विधि से सुन्दरतम भोजन, कबहुं यतीजन पाते।

यह 'आजीवक' दोषतजे यति, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं आजीवकदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनि दाता को सुसुहावन, बात कहे घर जाई।
भोजन ताके आप करे ऋषि, तो अघ लेय उपाई।।
दोष 'वनीपक' तजिमुनि याको, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं वनीपकददोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनि दाता के घर जाकर, औषधि-भेद बतावे।
नाड़ी देख सुरोग बतावे, फिर भोजन को खावे।
दोष 'चिकित्सा' त्याग के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं चिकित्सादोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनि भोजन लेय क्रोधयुत, दाता के घर जाई।
तो मुनि के शिर दोष चढ़त हैं, सो भोजन दुखदाई।।
'क्रोध' दोष यह तजे मुनीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं क्रोधदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हम तपसी दीरधकुल धारी, ज्ञान धरें अधिकाई।
यों कह भोजन ले दाता घर, मानसहित हो भाई।।
'मानदोष' यह तज के मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं मानदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन को मुनि जाय नगर में, दाता के घर जाई।
भोजन लेय कपटकर चित्त में, नाना छल दिखलाई।।
'मायादोष' तजे इसको मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं मायादोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लोभविवश हो दाता के घर, ले भोजन यति जाई।
स्वादलम्पटी रसना पोड्यो, तो शिर दोष चढ़ाई।।
'लोभ' दोष को तज के यतिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं लोभदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन पहले दाता की थुति, जो मुनिराज उचारे।
तो अपने तप संयम माहीं, दूषण ही निरधारें।
पूरबथुति अघ को तजके यों, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं पूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन दाता के घर ले मुनि, पीछे यह विधि लावे।
दाता की थुति करके भारी, आप दोष लिपटावे।।
पीछे थुति यह दोष त्याग मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं पश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिभोजन ले जिस दाता घर, ता प्रसन्नता काजे।
अपनी विद्याएँ दिखला के दोष आपको साजे।।
विद्यादोष त्याग यह मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं विद्यादोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन्त्र तन्त्र जंत्रादिक अतिशय, चमत्कार बतलावें।
पीछे भोजन लेय यतीश्वर, तो शिर पाप बंधावें।।
मन्त्रदोष यह तज के योगी, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं मन्त्रदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनि काजल नेत्रनि को दे, चूरन आदि बतावे।
यो कर भोजन ले दाता घर, तो सिर दोष बंधावे।।
'चूरण' अघ को छोड़ महामुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं चूर्णदोषरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वशीकरण आदिक की युक्ति, गृहियों को दिखलावे।
पीछे से मुनि भोजन लेवे, तो संयम मल पावे।।
'मूलकर्म' दूषण तज के यह, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं मूलकर्मदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन भक्ष्य अभक्ष्य कियो है, यो शंका करि खाये।
तो मुनि अपने संयम में यों, शंकित दोष लगावे।।
ऐसो 'शंकित' दोष त्याग मुनि, समिति एषणा पाले।

या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।
ओं ह्रीं शंकितदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
दाता के कर चिकने होवे, चिकने वासन जोवें।
तामें भोजन जो मुनि लेवें, तो सदोष वे होवें।।
मृक्षितदोष तजें यह मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।
ओं ह्रीं मृक्षितदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
सचित वस्तुपर रक्खा भोजन, मुनिवर कबहुँ न खावे।
अपने संजम भार लाभ या, सावधान चित लावें।।
यह निक्षिप्त दोष तजिके मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।
ओं ह्रीं निक्षिप्तदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
भोजन ढांके सचित वस्तु सों तो यति नाहीं खावे।
ऐसो कारण आय मिले तो, भोजन ही तज जावे।।
'पिहित' दोष को छोड़ यतीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।
ओं ह्रीं पिहितदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
पूरब नेह थकी भोजन लें, तो मुनि दूषण पावे।
हारदोष यह त्याग यतीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।
ओं ह्रीं हारदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
सूतक रोगी वृद्ध बाल जो, जलती अग्नि बुझावे।
गर्भवती तिय होय नपुंसक, इनि कर मुनि नहिं खावे।।
दायकदोष तजे मुनिनायक, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।
ओं ह्रीं दायकदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
आंचल सो बालक तज नारी, जो मुनि को पड़गाहे।
तो ताके कर को भोजन ऋषि, आय कबहुं नहिं खाहे।।
सम्व्यवहरण दोष तजि के मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।
ओं ह्रीं सव्यवहरणदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
वस्तु सचित्तअचित्त मिली जो, भोजन मैं मुनि खावे।
तो उसके अतिदूषण लागे, जग में निन्दा पावे।।

मिश्रदोष यह तजे मुनीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं उन्मिश्रदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जली और अधपक्की चीजें, वा अप्रासुक लाई।
भोजन में यतिवर को देवें, तो लेवें न कदाई।।
दोष अपरिणत को मुनि त्यागें, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं अपरिणतदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पात्र खड़ी हड़ताल गेरु से, यदि लिपटा हो भाई।
भाजी खिचड़ी कड़ी आदि या, लिपटी देय दिखाई।।
'लिप्तदोष' माने सत साधू, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं लिप्तदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु हात से द्रवित होय जो, या प्रदत्त तज खावे।
तो मुनिनायक अपने संयम, माहीं दोष लगावे।
त्यजनदोष यह तजकें मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं परित्यजनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उष्ण मांहि शीतल शीतल में, उष्ण मिलाकर खावें।
तो अपनो सत संजम नीको, ताके दोष लगावें।
दोष संयोजन नाम त्याग गुरु, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं संयोजनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस ग्रास मुनी का भोजन, सो ही उत्तम होई।
यासें अधिक न मुनिवर खावें, आज्ञा भंग न सोई।।
अप्रमाण इस अघ को छोड़े, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं अप्रमाणदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मीठो भोजन रुचि से खावे, दाता को जु सरावे।
बहु आसक्त होय भोजन ले, सो सिर दोष मड़ावे।।
दोष अंगार तजे गुरु याको, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं अंगारदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो भोजन मन चाहत नाहीं, खावत अरुचि कराहे।
दाता की निन्दा फिर ठानें, तो निज संयम दाहे।।
धूमदोष याको मुनि त्यागें, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं धूमदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

ऐसे तेइस दुगुन मल, टालत हैं मुनिराय।
तब भोजन करते सही, ते गुरु जजों सुभाय।।

ओं ह्रीं षट्चत्वारिंशद्दोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि के भोजन रते नभ से, काक वीट कर जावे।
देखे, मुनि तो भोजन छांड़े, हिये खेद ना लावे।।
काकदोश यह तजें यतीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं काकान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अपने पग जो अशुचि वस्तु से, लिपटे होंय कदाई।
देखे मुनि तो भोजन छांडे, अन्तराय गिन भाई।।
दोष अशौच्य तजे मुनि याको, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं अशौच्यान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनि भोजन को मग जातें, करता वमन निहारे।
तो तादिन आहार तजे यह, अन्तराय सु विचारे।।
छर्दि दोष को तज के मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं छार्दिदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रुदन करन्ते परको देखे, भोजन-बेला कोई।
अन्तराय तो होय मुनी को, भोजन करे न सोई।।
'रुदनदोष' यह तजे महामुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं रुदनान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज पर को मुनि लोहू देखें, भोजन बेला कोई।
अन्तराय तो लहें सुगुरुवर, समताधर जित सोई।।
'रुधिरदोष' यह तजे मुनीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं रुधिरदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अश्रुपात निज पर के देखें, भुक्तिकाल मुनिराई।
अन्तराय तो गिनें जगद्गुरु, करुणासागर भाई।।
'अश्रुपातदूषण' यह तज के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं अश्रुपातान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

'भोजन हेतु पात्र को जंघा, ऊपर गेहि चढ़ावे।
तो मुनिनाथ तजे भाजन को, अन जल पिये न खावें।।
'जंघानाम' दोष तजकें यति, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं जंघास्पर्शान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

साधु हाथ यदि घुटने नीचे, का इस्पर्श लहावे।
अन्तराय तो माने यतिवर, भोजन-गृद्धि हटावे।।
तज 'प्राव्रत्यदोष' कोनिश्चय, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं प्रावत्यान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सिर नाभीतल नीचा करके, द्वार निकाल बुलावे।
अन्तराय तो माने यतिवर, आगमविधि को ध्यावे।।
'नाभ्यधोनिर्गमन' दोष तजि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं नाभ्यधोनिर्गमनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तजी वस्तु भोजन में आई, निश्चय से जब जाने।
अन्तराय माने सत्साधू, आकुलता नहिं आने।।
'प्रत्याख्यान' जु दोष तजे यह, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं प्रत्याख्यानान्तरायदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जीवघात निज परकर सेती, भोजन-बेला होई।
तो मुनि देख तजे भोजन को, दयाभाव धर सोई।।
'जन्तूवधदूषण' तजके मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं जन्तुवधान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन करते हाथों में से, काक ग्रास ले जावे।
जो मुनिनाथ तजें भोजन को, ता दिन फेरि न खावें।।

काकपिंड यह दोष तजे मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं काकपिंडान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन करते ग्रास पड़े भू, दातृ पात्र कर सेती।
तो मुनि भोजन नाहिं करे फिर, है मर्यादा येती।।
पाणिपात दूषण तजके मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं पाणिपातान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन करते पाणिपात्र में, जीव मरे यदि आई।
तो ऋषिराज तजें भोजन को, करुणाभाव उपाई।।
पाणिपात्र जियघात दोष तज, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं पाणिपात्रजन्तुधातान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजनबेला आमिष देखें, तो भोजन गुरु छांड़ें।
तन विरकत संयम के लोभी, मुक्ति-राग ना मांड़े।।
आभिषदर्शन दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं आमिषदर्शनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजनबेला जगद्गुरू को, होय उपद्रव आई।
अन्तराय माने जीमन में, समताभाव समाई।।
दोषोपसर्ग त्याग के मुनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं उपसर्गान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन करते पगों बीच से, पञ्चेन्द्रिय निकसावे।
तो आहार न लेवें गुरुवर, संयम नांहि गमावें।।
पादन्तरजियगमन दोष तजि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं पादान्तरजीवगमनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन करते दाता कर से, पात्र यी गिर जावे।
तो आहार तजे गुरु ज्ञानी, संयम भव लियावे।।
पात्रसम्पतन दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।

या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं भोजनपात्रसम्पतनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन करते अपने तन से, मुनि जो मल निकसावे।
तो आहार तजे गुरु ज्ञानी, जिन आज्ञा उर ध्यावे।।
दोष उचार त्याग वृषलोभी, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं उच्चारत्यागान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन करते अपने तन से, निकले मूत्र अजाने।
तो आहार तजे गुरु ज्ञानी, जिनधुनि रहस पिछाने।।
दोष प्रसार त्याग के मनिवर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं प्रसारान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजनहेतु भूलसे यदि मुनि, शूद्र-गेह में जावे।
तो गुरुदेव तजे जीमन को, तिस दिन अनशन लावें।
दोष अभोजनगृह प्रवेश तज, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं अभोजनगृहान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्छा खाय गिरे यति अथवा, पर को मूर्छित देखे।
भवसागर के तीर गये यति, भोजन भक्ष्य न लेखे।।
पतनदोष को त्याग मुनीश्वर, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं पतनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन करते कर्मयोग भू, बैठ जाय मुनिराजा।
अन्तराय माने भोजन में, वास करें हित काजा।।
उपवेशन यह दोष त्याग गुरु, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं उपवेशनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कूकर आदिक हिंसक प्राणी, दंश करत यति जोवें।
अन्तराय माने गुरुनायक, कायर चित ना होवें।।
श्वादिदंश यह दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं स्वादिदशान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजनबेला सिद्धभक्ति को, कर मुनि शीश नवावे।
कर से यदि भूमि छू जावे, अन्तराय तब ध्यावे।।
भूमिस्पर्शदोष तज करके, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं भूमिस्पर्शान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन बिरिया अपना परका, यदि खकार लख लेई।
अन्तराय माने गुरु ज्ञानी, जिनवाणी जिस सेई।।
निष्ठीवन यह दोष छोड़ मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं निष्ठीवनान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजनकाल निजोदर से यदि, कृमि निकली यति जाने।
अन्तराय भोजन में माने, खेद नहीं उर आने।।
उदकृमीनिर्गमन दोष तज, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं उदरकृमीनिर्गमनातान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दाता के बिन दीनें भोजन, मुनि चाहे मनमाहीं।
अंगीकार करें तन मन से, तो शिर दोष बढ़ाही।।
दोष अदत्तग्रहण तज के मुनि, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं अदत्तान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजनबेला यति वा पर पै, वार करे यदि कोई।
तोमुनि तादिन अनशन धारें, कर्मविजय-हित सोई।।
दोष प्रहार तजें मुनिनायक, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं प्रहारान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन को जाते यदि पुर में, अग्नि लगी हो भाई।
अन्तराय तो गिनें यतीश्वर, भोजन नाहिं कराई।।
ग्रामदाह यह दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं ग्रामदाहारान्तरायरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मार्ग पड़ी पगअड़ी वस्तु जो, ले मुनिराज उठाई।
तो उनके वर संयम मांही, दोष लगे अधिकाई।।

पादपग्रहण यह दोष दूर कर समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं पादपग्रहणान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

राह पड़ी जो वस्तु आप कर, लें मुनिराज उठाई
अन्तराय तो गिनें जैन गुरु, लोभ धरें न कदाई।।
करग्रहण यह दोष त्याग के, समिति एषणा पाले।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, सो मेरे अघ टाले।।

ओं ह्रीं करग्रहणान्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसे वत्तिस अन्तराय जो, भोजन कालिक पाले।।
तो मुनि संयम पाले अपने, गुणलोभी अघ टाले।।
समिति एषणा ताके शुध हो, स्वर्ग मोक्ष सुखदाई।
या जुत सम्यक्चारित पूजों, जो मेरे मन भाई।।

ओं ह्रीं द्वात्रिंशदन्तरायरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छन्द

भोजन में नख निकले सोय, अन्तराय तो गुरु को होय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं नखमलरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

केश नीसरे भोजन माँय, अन्तराय तो यती मनाय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं केशमलरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मृतप्राणी भोजन में जोय, तो मुनि भोजन छाँड़े सोय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं मृतजीवदर्शनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन समय अस्थि यदि जोय, तो यति भोजन त्यागे सोय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं कीकशदोषदर्शनरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जीमत राध नजर जो आय, तो योगी आहार न पाय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं पूयामलरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन करत चर्म दिखलाय, तो योगी आहार न पाय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं चर्मदर्शनरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जीमत यदि रुधिर अवलोय, तो आहार तजे यति सोय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं रुधिरदर्शनरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन बेला आमिष जोय, तो मुनि भोजन नाहीं होय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं आमिषदर्शनरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन में यदि कणा दिखाय, तो मुनि भोजन नाहीं खाय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं कणदर्शनरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जीमत तिल के अंश दिखाय, तो मुनिवर आहार न पाय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं तिलकणदर्शनरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन में यदि बीज दिखाय, तो भोजन नाहीं यति खाय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं बीजदर्शनदोषरहितैषणासमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

साबित फल भोजन में आय, ऋषि अनशन धारें हरषाये।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं फलदर्शनरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कन्दवस्तु भोजन में आय, अन्तराय माने मुनिराय।
समिति एषणा तब शुध जान, या जुतचारित पूज्यसुमान।।

ओं ह्रीं कन्ददर्शनरहितैषणासमितिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु देख के यती उठाव, समिति एषणा शुद्धिकराय।
या जुत सम्यक्चारित सोय, मैं पूजों वसु द्रव्य संजोय।।

ओं ह्रीं आदानसमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि जो वस्तु भूमि में धरे, जियरक्षा तब चित में धरे।
निक्षेपणसमिती चितलाय, या जुतचारित जजों सुखाय।।

ओं ह्रीं निक्षेपणसमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तनमल जहँ भू क्षेपे यती, भूशुद्धी देखे शुभमती।
यह व्युत्सर्ग समिति मनलाय, या जुतचारितपूज्यसुभाय।।

ओं ह्रीं व्युत्सर्गसमितियुत सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मनविकल्प जिनध्वनि सम करें, और ठौर नांही मन धरे।
मनोगुप्ति धारें मुनिराज, याजुतवृत्तजजों सतभाय।।

ओं ह्रीं मनोगुप्तिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवच जिन आज्ञा समहोय, ताते पाप लगे ना कोय।
वचनगुप्ति पाले मुनिराज, या जुत वृत्त जजों शिर नाय।।
ओं ह्रीं वचनगुप्तिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
तनको मुनि वश राखें सोय, बिना प्रयोजन चलना होय।
कायगुप्ति सो जानो सही, याजुत वृत्तजजों शुभ मही।
ओं ह्रीं कायगुप्तिसहित सम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
पंच महाव्रत समिति जु पांच, तीन गुप्ति मिलचारित सांच।
यों तेरहविध चारित जान, पूजों मनवच अर्घ्य सुआन।।
ओं ह्रीं त्रयोदशप्रकारसम्यक्चारित्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला दोहा

सम्यक्चारित मोक्ष को, कारण और न कोय। पापपन्थ तज सर्व ही, चारित की विधि जोय।।

बेसरी छन्द

सम्यक्चारित भवदधिनावा, सिद्धक्षेत्रधरि देनस्वभावा।
परिग्रहधारि लहे ना याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
मोहराय जीतन को जावे, जो चारित्र कवच तन लावे।
ध्यावत हैं सुरखग नरयाको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
सम्यक्चारित मोक्ष निशाना, या बिन होय न कर्मन हाना।
या बिन मोक्ष न होवे काको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चरितग्रहण वीर का कामा, कायर पै न सधे गुणधामा।
निर्मोही धारत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
शंकासहित जोव बलहीना, ते कँह धार सकें यह दीना।
महापुरुष धारत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
कामीजन तो देखत लज्जैं, शीलवान धर्मी जन सज्जें।
चारित उपमा दीजे काको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चारित को चक्रीधर चाहें, सुर खग इन्द्र भावना भाहें।
निकटभव्यधारत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चारित चरमशरीरी धारें, चारित से कर्मारि विदारें।
कामदेव से धारत याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चारित नाम सुनत हरषावे, सो जिय चारित महिमा पावे।
चारित धारत है धनि वाको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
यह चारित पीड़ाहर भाई, धारक शक्रविभव को पाई।
शिववांछक सेवत हैं याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चारित सर्वहितू लखि भाई, चारित सर्वोत्तम सुखदाई।

मुनिजन पूजत ध्यावत याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चारित को हम भी ललचावें, क्या जाने किस भव में पावें।
इस भव करत भावना याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।
चारित का शरणा जिन पाया, ताने निजभव सफल बनाया।
शक्तिप्रद हितकर गिन याको, मैं पूजों मन वच तन ताको।।

सुर नर पूजत ताहि को, जो चारित्र लहाय।
सो चारित महिमा अतुल, नमों सदा शिर नाय।।

ओं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय जयमालार्ध्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला दोहा

सम्यग्दर्शन ज्ञान सह, चारित लेहु मिलाय। मोक्षमार्ग ये तीन ही, मैं पूजों शिर नाय।।

चौपाई

रत्नत्रय शिवमारग जान, या बिन मोक्षमार्ग ना आन।
ये ही शिवदायक मन लाय, मोको भवहर होय सहाय।।

चाल मुनियानन्दी की

भुवन त्रय मुकुट शुभ, रतन त्रय जानिये। तीन जग जीव थुति, करे हित मानिये।।
तास फल पापमल, धोय निज शुध करें। मैं जजों भाव तैं, कार्य वांछित सरें।।1।।
तीन जग भ्रम्यो बिन, रतनत्रय पाय जी। मिली नहिं सेवकी, कहुँ सुखदाय जी।।
अब शुभ दिन भयो, भक्ति इनकी करें। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।2।।
चक्रि नरराज से, रतनत्रय काज जी। तजे सब जगत सुख, दाय बहुराज जी।।
छोड़ि सब परिग्रह, वास वन में करें। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।3।।
बिना रतनत्रयी, तीर्थंकर देव जी। सिद्ध पद ना लहें, करें बहुसेव जी।।
तास तें रतन त्रय, एक शिवफल करे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।4।।
भये रतन त्रय पाय, देव गणधर सही। रतनत्रय लाभ तैं, पदविमुनिकीलही।।
सकल सुख देय कर, रतनत्रय अघ हरे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।5।।
रतनत्रय तीर्थसम, जगत में सार जी। रतनत्रय देय भव, तार अधिकार जी।
रतनत्रय गुरू हम, पाय तप को करें। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।6।।
रतनत्रय धर्म सब, हरे सब कर्म जी। रतनत्रय ज्योति तैं, मिटे बहु भर्म जी।।
रतनत्रय रूप लखि, मुकतिनार वर करे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।7।।
रतनत्रय छत्रता, शिर फिरे आय जी। जीव सो जगत तजि, मुक्तिराज पाय जी।।
रतनत्रय लक्ष्मि की, चाह हरि सुर करे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।8।।
रतन त्रय रविसदृश, रागतम नाशि है। रतन त्रय नेत्र तैं, तत्त्व सुप्रकाश है।।
रतन त्रय मुकुट शिव, नार बल्लभ करे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।9।।
रतन त्रय राह को, नग्न जावे सही। किन्तु जो परिग्रही, तास निभती नहीं।।

रतनत्रय देहि भजि, आपसम जो करे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।10।।
रतन त्रय एक जग, मांहि है सार जी। कीजिये कहा कहों, और निरधार जी।।
रतन त्रय नाव भव, अब्धि पारे करे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।11।।
विरत यह रतन त्रय, करे धन्य सोय जी। या थकी फेर ना, जन्म मृत्यु होय जी।।
विरत यह रतनत्रय, मोक्ष दे हित करे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।12।।
करो भवि रतनत्रय, विरत मन लाय जी। समय यह कठिन कर, मिलोशुभ आय जी।
मनुषतन उच्चकुल, याहि सो ही करे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।13।।
विरत की विधी या, आर्ष बतलाय जी। वासत्रय आदि अन्त, एकभुक्ति पाय जी।।
रीति उत्कृष्ट सो, भव्य मन में धरे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।14।।
होय ना शक्ति उत, कृष्ट की तो सुनो। आदि जुग मान इक, पारणा दिन गुनो।।
नांहि मध्य शक्ति अंत, आदि अनशन करें। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।15।।
होय अल्पशक्ति तो, वह करें येम जी। मध्य इक वास अन्त, पारना जीम जी।।
वास ना शक्ति तो, अल्प भोजन करे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।16।।
विरत ऐसे करे, वर्ष तेरह सही। तथा वर्ष नौ त्रय, विरतकर ध्वनि कही।।
अन्त उद्यापना, या दुगुन व्रत करे। जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।17।।
शक्तिसम द्रव्य ले, फेरि जिन पूजिये। दीजिये दान पर, भावना कीजिये।।
और घनी विधि जिन, वानि लखि के धरे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।18।।
विरत ऐसे किये, कर्म अरि को हरे। भव्य व्रत धार यों, भावना मन धरे।।
रत्नत्रय विरत की, सेव शिवसुख करे। मैं जजों भाव तैं, कार्य वाँछित सरें।।19।।

दोहा

रत्नत्रय की सेव कर, रत्नत्रय गुण भाव। रत्नत्रय की भावना, कर पल पल शिव नाव।।
ओं ह्रीं श्री सम्यग्रत्नत्राय महाअर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

इति रत्नत्रयविधान समाप्तम्।